

---

---

---

---

---

---

---

---



---

---

---

---

---

---

---

---



---

---

---

---

---

---

---

---

### John 15

"I am the true vine, and my Father is the gardener. <sup>2</sup>He cuts off every branch in me that bears no fruit, while every branch that does bear fruit he prunes so that it will be even more fruitful. <sup>3</sup>You are already clean because of the word I have spoken to you. <sup>4</sup>Remain in me, as I also remain in you. No branch can bear fruit by

---

---

---

---

---

---

---

---

### John 15

itself; it must remain in the vine. Neither can you bear fruit unless you remain in me. <sup>5</sup>"I am the vine; you are the branches. If you remain in me and I in you, you will bear much fruit; apart from me you can do nothing. <sup>6</sup>If you do not remain in me, you are like a branch that is

---

---

---

---

---

---

---

---

### John 15

thrown away and withers; such branches are picked up, thrown into the fire and burned. <sup>7</sup>If you remain in me and my words remain in you, ask whatever you wish, and it will be done for you. <sup>8</sup>This is to my Father's glory, that you bear much fruit, showing yourselves to be my disciples.

---

---

---

---

---

---

---

---

## Isaiah 5

The vineyard of the LORD Almighty  
is the nation of Israel,

I AM

---

---

---

---

---

---

---

I am the  
True  
vine



---

---

---

---

---

---

---

## Abide...

1. Endure
2. Remain stable
3. To continue in a given place or relation or state of expectancy
4. To dwell
5. To be present

I AM

---

---

---

---

---

---

---

## Results of Abiding in Christ:

1. Growth



---

---

---

---

---

---

---

---

## What's needed for growth?

1. Good soil
2. Water
3. A trellis for guidance
4. Pruning



---

---

---

---

---

---

---

---

## John 15

<sup>2</sup>...every branch that does bear fruit he prunes so that it will be even more fruitful.



---

---

---

---

---

---

---

---

Results of Abiding in Christ:

- 1. Growth
- 2. Fruit



---

---

---

---

---

---

---

---

John 15

<sup>8</sup> This is to my Father's glory, that you bear much fruit, showing yourselves to be my disciples.



---

---

---

---

---

---

---

---

John 13

<sup>35</sup> "By this everyone will know that you are my disciples, if you love one another."



---

---

---

---

---

---

---

---



---

---

---

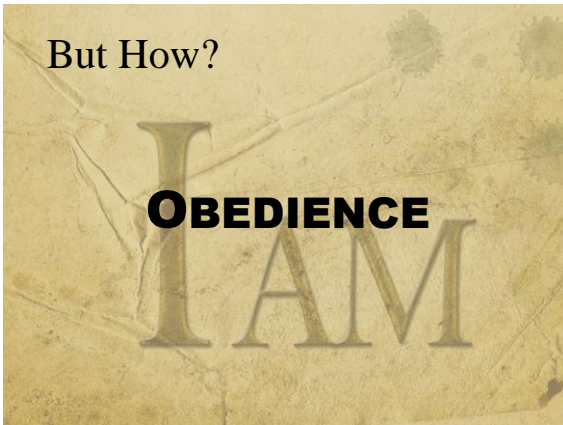
---

---

---

---

---



---

---

---

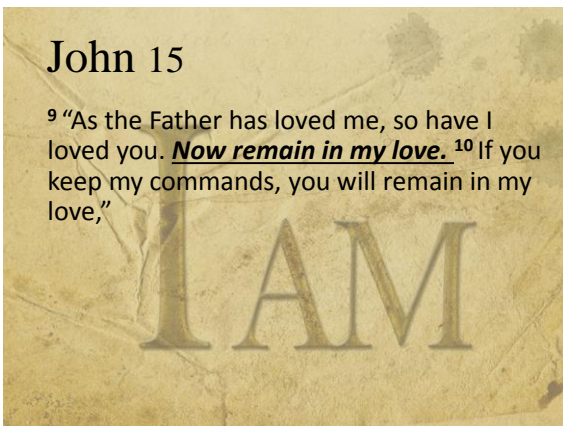
---

---

---

---

---



---

---

---

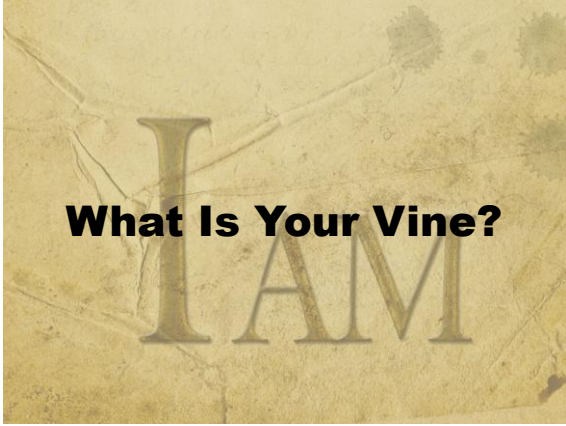
---

---

---

---

---



---

---

---

---

---

---

---